लड़कियों की शिक्षा में मिशनों की भूमिका

श्रीजिता चक्रवर्ती

सरकार ने सभी के लिए स्कूली शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए दृढ़ प्रयास किए हैं लेकिन इसके बावजूद, छह से तेरह साल की उम्र के 119 लाख बच्चे स्कूल नहीं जाते हैं। इनमें से ज़्यादातर हाशिए के समुदायों से हैं। प्रतिबन्धित भौगोलिक गतिशीलता के कारण मुस्लिम समुदाय में अधिकांश लड़कियों को शिक्षा के पर्याप्त अवसर नहीं मिले हैं, हालाँकि अब यह स्थिति माता-पिता के रवैये में बदलाव के कारण परिवर्तित हो रही है। अब माता-पिता को शिक्षा के लाभों का एहसास हो रहा है जैसे लड़कियों के लिए शादी की बेहतर सम्भावनाएँ और अगली पीढ़ी के भी शिक्षित होने की सम्भावना; इसलिए माता-पिता अब गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए पैसा ख़र्च करने को तैयार हैं। सार्वजनिक शिक्षा की ख़राब गुणवत्ता ने एक निजी बाज़ार को जन्म दिया है जहाँ आवासीय संस्थान (जिन्हें *मिशन* कहा जाता है) लड़कियों की आवाजाही से जुड़ी चुनौतियों का समाधान प्रदान करते हैं।

खदीजतुल कुबरा गर्ल्स मिशन (केकेजीएम) एक ऐसा संस्थान है जो विशेष रूप से लड़कियों की आवश्यकताओं का ध्यान रखता है, अन्यथा शायद कई लड़कियाँ स्कूल छोड़ चुकी होतीं। जैसा कि छात्राएँ बताती हैं, केकेजीएम में एक ही स्थान पर सब कुछ उपलब्ध कराया जाता है और यही बात इसे अन्य संस्थानों से अलग बनाती है। एक मामूली-से मासिक शुल्क में ट्यूशन, भोजन और आवास की व्यवस्था की जाती है। नियमित पाठ्यक्रम के अलावा केकेजीएम में डिजिटल प्रौद्योगिकी का उपयोग करके छात्राओं के अनुभव को बढ़ाने का भी प्रयास किया जाता है। एक ग़ैर-लाभकारी संगठन, ऐन फाउण्डेशन के साथ साझेदारी करते हुए यह स्काइप पर अँग्रेज़ी की वर्चुअल कक्षाओं की सुविधा भी उपलब्ध कराता है। फाउण्डेशन के स्वयंसेवी शिक्षकगण लड़कियों की रोज़गार क्षमता को बेहतर बनाने के लिए पढ़ने, लिखने और संवादात्मक अभ्यासों से सम्बन्धित बहुत सारी कक्षाएँ आयोजित करते हैं। शिक्षकों के साथ नियमित रूप से बातचीत करने से लड़कियों को बाहरी दुनिया की जानकारी मिलती है, जिससे उनके ज्ञान के क्षितिज का विस्तार होता है।

निजी मिशन इतने लोकप्रिय क्यों हैं?

शिक्षा का अधिकार (आरटीई) अधिनियम के कारण स्कूल न जाने वाले बच्चों की संख्या में काफ़ी कमी आई है, विशेषकर 14 वर्ष तक के बच्चों की संख्या में। 2014 में प्राथमिक विद्यालय-आयु-वर्ग के बच्चों में से 6.4% और निम्न माध्यमिक विद्यालय-आयु-वर्ग के बच्चों में से 5.7% बच्चे स्कूल से बाहर थे। *सभी के लिए स्कूली शिक्षा* प्राप्त करने के क्षेत्र में पर्याप्त प्रगति के बावजूद, वृहद जनसंख्या के कारण, 119 लाख बच्चे (उम्र 6 से 13) स्कूल से बाहर हैं।[i]

मुस्लिम बच्चों में स्कूल का बहिष्करण काफ़ी अधिक है और दोनों आयु समूहों में बहिष्करण की दर, अन्य धर्मों के बच्चों की तुलना में कहीं अधिक है। निम्न माध्यमिक आयु के बच्चों में बहिष्करण दर 9.1% है, जो राष्ट्रीय औसत से कहीं अधिक है। इसमें वित्तीय बोझ की प्राथमिक भूमिका है - अक्सर शिक्षा की लागत और काम करने के अवसर गंवाने की लागत मिलकर इन बच्चों को स्कूल से बाहर कर देती है।

ऐतिहासिक रूप से, लड़कों की तुलना में लड़कियों के स्कूल छोड़ने की दर अधिक है, जो प्राथमिक स्तर के बाद बढ़ जाती है। वित्तीय बोझ के अलावा, कुछ अन्य कारक लड़कियों को बहुत प्रभावित करते हैं। दूसरे क्षेत्रों की तुलना में मुस्लिम इलाक़ों में कम स्कूल हैं। लड़के अपनी इच्छा के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने के लिए दूर तक यात्रा कर सकते हैं, लेकिन लड़कियाँ ऐसा करने में असमर्थ हैं। अगर स्कूल सुलभ होते भी हैं, तो ख़राब बुनियादी ढाँचा अक्सर एक बाधा बन जाता है - एक तिहाई ग्रामीण स्कूलों में लड़कियों के लिए शौचालय नहीं हैं, जबकि एक चौथाई से अधिक में किसी भी प्रकार के उपयोग में लाने योग्य शौचालयों का अभाव है।[ii]

समस्या सिर्फ स्कूलों तक पहुँच की नहीं बल्कि उससे कहीं ज़्यादा है। जो छात्राएँ निजी ट्यूशन के पैसे दे सकती हैं, वे अपने स्कूली शिक्षण की भरपाई करने के लिए ट्यूशन की कक्षाओं में जाती हैं। जिस कारण से मुस्लिम बहुल इलाक़ों में स्कूलों की कमी होती है, उसी कारण से इन क्षेत्रों में निजी ट्यूटर्स की भी कमी है - समुदाय में साधारणतया निम्न शिक्षा-स्तर। मुस्लिम लड़के ट्यूटर से पढ़ने के लिए बहुत दूर के इलाक़ों तक भी जा सकते हैं, लेकिन लड़कियों को इस प्रकार से आने-जाने का अवसर बहुत कम मिलता है।

लेकिन अब माता-पिता के बदलते रवैये के कारण लिंग सम्बन्धी अन्तर कम हो रहा है। वे अब अपनी लड़कियों को शिक्षित करने के लिए उत्सुक हैं क्योंकि इससे उनकी शादी की सम्भावनाएँ बेहतर हो जाती हैं, भविष्य की पीढ़ियों को शिक्षा प्रदान करने की सम्भावनाएँ बढ़ती हैं और विधवा होने की

स्थिति में आत्म-निर्भरता की भावना पैदा करती है।[iii] माता-पिता गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए पैसा ख़र्च करने को तैयार हैं और जहाँ सार्वजनिक स्कूलों की कमी है, वहाँ एक निजी बाज़ार उभरता है। उदाहरण के लिए, पश्चिम बंगाल में मुफ़्त शिक्षा प्रदान करने के बेहतरीन सरकारी प्रयासों के बावजूद कई ऐसे निजी संस्थान या मिशन खुल गए हैं जो महँगी शिक्षा प्रदान करते हैं और उनमें सरकारी स्कूलों की तुलना में कम योग्यता प्राप्त शिक्षक हैं। यह संस्थान किसी भी शैक्षिक बोर्ड के साथ पंजीकृत नहीं हैं और इसलिए परीक्षा आयोजित नहीं कर सकते हैं। छात्राओं का नामांकन भले ही पड़ोस के किसी पंजीकृत स्कूल में किया गया हो लेकिन वे मिशन में ही रहती हैं, वहीं की कक्षाओं में पढ़ती हैं और केवल परीक्षा देने के लिए पंजीकृत स्कूल जाती हैं।

इनमें से कुछ मिशन, जैसे केकेजीएम, विशेष रूप से मुस्लिम लड़कियों की आवश्यकताओं का ध्यान रखते हैं अन्यथा शायद इनमें से कई लड़कियाँ स्कूल छोड़ चुकी होतीं।

हमारा अनुभव

पश्चिम बंगाल में हावड़ा ज़िले के बैनन गाँव में स्थित केकेजीएम की स्थापना 2014 में हुई थी और इसे मुख्य रूप से खदीजतुल कुबरा एजुकेशन ट्रस्ट द्वारा फंड किया गया है। स्कूल में कक्षा 6 से 12 में क़रीब 500 छात्राएँ हैं, जिनमें से अधिकांश निम्न आय वाले परिवारों से हैं। कुछ अनाथ हैं। यह छात्राएँ पश्चिम बंगाल के विभिन्न ज़िलों से आती हैं और उन्हें प्रवेश-परीक्षा के माध्यम से दाखिला दिया जाता है; परीक्षा में उनके प्रदर्शन और उनकी वित्तीय स्थिति के आधार पर उनके स्कूल की फ़ीस तय की जाती है। जो छात्राएँ फ़ीस दे सकती हैं, वे 4000 रु. का मासिक शुल्क देती हैं, जिसमें ट्यूशन, भोजन और आवास शामिल हैं। ज़रूरतमन्द छात्राओं के लिए, जिनकी संख्या काफ़ी है, इस शुल्क पर राहत या छूट दी जाती है। कुछ शिक्षाविदों, परोपकारी और अन्य शुभचिन्तकों से मिले दान से यह सम्भव हो पाता है।

स्कूल में शिक्षा का माध्यम बंगाली है और यहाँ धार्मिक अध्ययन के साथ-साथ माध्यमिक और मदरसा पाठ्यक्रम दोनों का अनुसरण किया जाता है। नियमित कक्षाओं के अलावा केकेजीएम में उन छात्राओं के लिए उपचारात्मक कक्षाएँ भी आयोजित की जाती हैं जिन्हें पढ़ाई में किसी प्रकार की दिक्क़त पेश आ रही हो। दसवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षाओं के बाद यह स्कूल अपनी छात्राओं को संस्थान में माध्यमिक स्तर का अध्ययन जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करता है और इस तरह काफ़ी प्रभावी रूप से माध्यमिक स्तर पर ड्रॉप-आउट दरों पर अंकुश लगाता है।

यह स्कूल किसी भी अन्य स्कूल के समान ही अच्छे साधनों से लैस है, जिसमें कक्षाएँ, विज्ञान और कंप्यूटर प्रयोगशालाएँ, पुस्तकालय, प्रार्थना कक्ष और खेल के लिए एक छोटा-सा मैदान है। रहने के कमरे काफ़ी बड़े हैं, और एक कमरे में क़रीब तीस लड़कियाँ रहती हैं। दिन में चार बार भोजन दिया जाता है। दिन में पाँच बार नमाज़ अदा की जाती है। परिवार के लोग हफ़्ते में एक बार लड़कियों से मिलने आते हैं। परिसर में मोबाइल फोन रखने की अनुमति नहीं है।

यह संस्थान इतने लोकप्रिय इसलिए हैं क्योंकि यहाँ आवासीय सुविधा है जिससे लड़कियों की प्रतिबन्धित आवाजाही से उत्पन्न कई समस्याएँ दूर हो जाती हैं। इन स्कूलों में महिला शिक्षकों का अनुपात भी अधिक है, जिससे वातावरण लड़कियों के अनुकूल हो जाता है। एक इलाक़े से दूसरे इलाक़े में महिलाओं की आवाजाही पर रोक और शिक्षा व स्वास्थ्य के अलावा अन्य व्यवसायों को अपनाने पर प्रतिबन्धों के कारण उन स्थानों में स्थानीय शिक्षित महिलाओं के एक समूह का निर्माण होता है जहाँ पर लड़कियों के माध्यमिक स्तर के स्कूल हैं (अंद्राबी, दास और ख्वाजा, 2013)।

यहाँ भी यही सिद्धान्त लागू होता है। कुछ महिला शिक्षिकाएँ परिसर में ही रहती हैं और अन्य आस-पास के इलाक़ों से आती हैं। अतः यहाँ शिक्षकों की अनुपस्थिति शून्य है, जबकि सार्वजनिक स्कूलों में शिक्षा की ख़राब गुणवत्ता का एक महत्त्वपूर्ण कारण शिक्षकों की अनुपस्थिति है। केकेजीएम की अधिकांश छात्राएँ शिक्षक बनने की इच्छा रखती हैं, जिसकी वजह से हम आशा करते हैं कि मुस्लिम समुदायों में और अधिक निजी स्कूलों की स्थापना होगी।

अन्य विशेषताएँ

पाठ्येतर मदद

अपनी छात्राओं को सीखने का समग्र अनुभव प्रदान करने के लिए, केकेजीएम में पाठ्यक्रम के साथ-साथ और भी विभिन्न गतिविधियाँ शामिल की गई हैं। कंप्यूटर की कक्षाओं में टाइपिंग करने, पावरपॉइंट प्रेज़ेंटेशन बनाने और ईमेल करने जैसे बुनियादी कार्यों में लड़कियों को प्रशिक्षित किया जाता है। शारीरिक प्रशिक्षण कक्षाएँ भी नियमित रूप से आयोजित की जाती हैं, जिसमें लड़कियाँ बैडमिंटन या कबड्डी खेलती हैं या योग सीखती हैं। संस्थान में वार्षिक खेल-दिवस भी मनाया जाता है जिसमें विभिन्न प्रकार की दौड़ें और खेल आयोजित किए जाते हैं। कला और शिल्प को प्रोत्साहित किया जाता है, लड़कियों की रुचि के हिसाब से चित्रकला, सिलाई और क्रोशिया की कक्षाएँ चलाई जाती हैं। कभी-कभी यह स्कूल स्थानीय स्वास्थ्यकर्मियों को आमंत्रित करता है जो प्राथमिक चिकित्सा और बुनियादी नर्सिंग कौशल में लड़कियों को प्रशिक्षित करते हैं।

इनमें से कुछ गतिविधियाँ कक्षाओं की समाप्ति के बाद शाम को छात्राओं को व्यस्त रखती हैं। पुस्तकालय हर समय खुला रहता है, जिसमें 1500 से अधिक क़िताबें हैं। इन पुस्तकों में पाठ्यपुस्तकें और उपन्यास या कहानियों की पुस्तकें हैं और यह अधिकतर बंगाली में हैं। इनमें से लगभग 200 पुस्तकें अँग्रेज़ी में भी हैं। टीवी, मोबाइल और अन्य किसी प्रकार की व्यस्तताओं के न होने के कारण छात्राएँ शाम को या अपने ख़ाली समय में अक्सर पढ़ने या अध्ययन का कार्य करती हैं।

भारत में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए डिजिटल तकनीक की सम्भावानओं पर काफ़ी ध्यान दिया जा रहा है; केकेजीएम भी इस दिशा में बहुत पीछे नहीं है। अपने सादे बुनियादी ढाँचे के बावजूद, केकेजीएम वर्चुअल अँग्रेज़ी कक्षाओं के माध्यम से अपने नियमित पाठ्यक्रम के संवर्धन का प्रयास करता है। हालाँकि स्कूल में अँग्रेज़ी द्वितीय भाषा के रूप में पढ़ाई जाती है, लेकिन छात्राएँ इसका उपयोग करने में सहज नहीं हैं। उन शिक्षिकाओं और शिक्षित स्थानीय महिलाओं की भूमिका यहाँ महत्त्वपूर्ण हो जाती है जिन्होंने ख़ुद अँग्रेज़ी रटकर सीखी थी।

ऐन फाउण्डेशन

केकेजीएम ने अपने स्कूल में मौजूद इस कमी को स्वीकारा और रोज़गार के लिए अँग्रेज़ी भाषा के महत्त्व को पहचानते हुए एक ग़ैर-लाभकारी संगठन, ऐन फाउण्डेशन के साथ भागीदारी की ताकि इस अन्तर को पाटा जा सके। यह फाउण्डेशन वैश्विक स्तर पर, स्कूलों और अनाथालयों के वंचित बच्चों और युवाओं के लिए अँग्रेज़ी और कंप्यूटर की ऑनलाइन कक्षाएँ संचालित करता है। सफल युवा पेशेवर, धीरे-धीरे इस बात के प्रति जागरूक हो रहे हैं कि समाज से उन्हें जो कुछ मिला है उसे चुकाने में वे क्या भूमिका निभा सकते हैं। लेकिन अक्सर समय या भौगोलिक बाधाओं के कारण ऐसा कर पाने में मुश्किलें पेश आती हैं। ऐन फाउण्डेशन ने इन बाधाओं को प्रभावी ढंग से दूर किया। यह दुनिया में कहीं भी रह रहे किसी उत्साही स्वैच्छिक कार्यकर्ता या वालंटियर को ढूँढ़ता है और उसका सम्पर्क अपने किसी भागीदार संस्थान से करा देता है।

केकेजीएम में फाउण्डेशन द्वारा विभिन्न कक्षाओं के लिए हर दिन एक घण्टे की कक्षाएँ चलाई जाती हैं। केकेजीएम में एक कक्षा में लगभग 50 छात्राएँ हैं; प्रत्येक कक्षा को 10-12 छात्राओं के छोटे समूहों में विभाजित किया जाता है और उनके लिए एक वालंटियर निर्धारित किया जाता है। अधिकतर वालंटियर महिलाएँ हैं जो बंगाली भाषा की अच्छी जानकार हैं और वे अमरीका, ब्रिटेन, जर्मनी, कनाडा और बांग्लादेश सहित दुनिया के कई देशों में रहती हैं। प्रत्येक समूह को सप्ताह में लगातार दो दिन एक घंटे के लिए पढ़ाया जाता है, जिसमें सप्ताहान्त भी शामिल है। कक्षाएँ शाम को आयोजित की जाती हैं ताकि उनके नियमित अध्ययन में बाधा न पड़े। कक्षाएँ स्काइप पर आयोजित की जाती हैं, जिसमें केकेजीएम की एक दर्जन लड़कियों के सामने एक लैपटॉप रखा हुआ होता है। केकेजीएम की ओर से एक शिक्षक कक्षा को सहायता प्रदान करता है। यदि कोई ट्यूटर कक्षा लेने के लिए उपलब्ध न हो तो यह शिक्षक ऐन फाउण्डेशन के कार्यक्रम समन्वयक को सूचित करते हैं ताकि वे किसी दूसरे ट्यूटर की व्यवस्था कर सकें। जब विकल्प भी उपलब्ध न हो तो ऐसी स्थिति से निपटने के लिए ट्यूटर अपने पास वृत्तचित्रों या लघु फिल्मों का संग्रह तैयार रखते हैं और केकेजीएम के सुगमकर्ता के साथ वीडियो के लिंक साझा करते हैं ताकि वे इन्हें कक्षा में दिखा सकें।

इन कक्षाओं में पढ़ने, लिखने और संवाद सम्बन्धी कई अभ्यास करवाए जाते हैं जिन्हें ट्यूटर पहले से ही तैयार करके रखते हैं। अनुभव से पता चला है कि लड़कियाँ पढ़ने और लिखने में तो काफ़ी अच्छा प्रदर्शन करती हैं, लेकिन धाराप्रवाह बोलने में उन्हें दिक्क़त होती है। प्रारम्भिक बाधा तो उनकी झिझक है, जिसका कारण है अँग्रेज़ी बोलने में आत्म-विश्वास की कमी। इसे दूर करने के लिए, उनके जोड़े बनाए जाते हैं और मिलकर बोलने के लिए कहा जाता है। जब ट्यूटर प्रत्येक छात्रा की क्षमताओं का आकलन करने के लिए कक्षा के साथ पर्याप्त समय बिता लेते हैं तो वे कमज़ोर छात्राओं के साथ बेहतर प्रदर्शन करने वाली छात्राओं के जोड़े बनाती हैं। प्रमाणों से पता चला है कि ऐसा करने से कमज़ोर छात्रा में काफ़ी सुधार आता है और मजबूत छात्रा का अच्छा प्रदर्शन जारी रहता है।

उनके आत्म-विश्वास को और अधिक बढ़ावा देने के लिए ट्यूटर उन्हें सामान्य, रोज़मर्रा की बातचीत के माध्यम से सहज बनाने की कोशिश करते हैं, जैसे कि किसी नए व्यक्ति को अपना परिचय देना या अपनी रुचियों पर चर्चा करना। वे परिदृश्य-आधारित बातचीत का भी अभ्यास करती हैं, जैसे कि जब वे किसी दुकान में जाती हैं तब ख़ुद को व्यक्त करना या पुलिस से अपराध की रिपोर्ट करना। स्पष्ट संवाद करते हुए लोगों के वीडियो देखना भी फलदायी साबित हुआ है। जब अभ्यासों को खेल के रूप में करवाया जाता है या जब उन्हें नियमित रूप से ग्रेड दिए जाते हैं और उत्तम प्रयासों की सराहना की जाती है तो प्रदर्शन बेहतर होता है।

वास्तव में लड़कियों के लिए इन कक्षाओं की अहमियत केवल अँग्रेज़ी सीखने से कहीं ज़्यादा है। इन कक्षाओं के कारण इन लड़कियों को हर हफ़्ते, कुछ घण्टे इन प्रतिबन्धित और सख़्त परिस्थितियों से बाहर निकलने का मौका मिलता है। यह कक्षाएँ उन्हें बाहरी दुनिया में झाँकने का अवसर देती हैं, वह भी ऐसी जो उनकी दुनिया से बहुत अलग है। यह ट्यूटर - सफल युवा महिलाएँ - लड़कियों में आशा की भावना जगाती हैं, एक

ऐसी आशा जो उन्हें तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद नई ऊँचाइयों पर पहुँचने की आकांक्षा रखने में मदद करती है। यहाँ का वातावरण कई लोगों को घुटनभरा लग सकता है, लेकिन केकेजीएम में छात्राएँ काफ़ी आनन्दपूर्वक रहती हैं। भले ही उन्हें अपने परिवारों से दूर रहना पड़ता है और अपने सभी काम ख़ुद करने पड़ते हैं, पर वे अपनी सहेलियों के साथ रहने का आनन्द लेती हैं - एक ऐसी साधारण-सी ख़ुशी जिससे शायद वे वंचित रह जातीं, यदि घर पर ही रहतीं।

भविष्य पर एक नज़र

2016 से, केकेजीएम से पढ़कर निकली छात्राएँ अधिक संख्या में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में बहुत-सी लड़कियाँ दाख़िला लेती हैं - कुछ कोलकाता और बेंगलूरु में नर्सिंग का कोर्स करती हैं, कुछ फार्मेसी का और कुछ-एक लड़कियाँ एमबीबीएस की पढ़ाई भी करती हैं। अन्य लोकप्रिय पाठ्यक्रमों में क़ानून, इंजीनियरिंग, प्रबन्धन और विज्ञान एवं मानविकी में विभिन्न स्नातक पाठ्यक्रम शामिल हैं। केकेजीएम के निदेशक श्री जनाब अली मोल्लाह के अनुसार, वर्तमान में, संस्थान से पढ़कर निकली छात्राओं में से लगभग 35% छात्राएँ कॉलेज में दाख़िला लेने में असमर्थ हैं क्योंकि उनके पास या तो संसाधनों की कमी है या उनकी शादी कर दी जाती है। उच्च माध्यमिक स्तर की पढ़ाई के दौरान लगभग 5% छात्राएँ ड्रॉप-आउट हो जाती हैं। इन बाधाओं को देखते हुए केकेजीएम ने कंप्यूटर अध्ययन और सिलाई जैसी व्यावसायिक कक्षाएँ शुरू की हैं ताकि जो लड़कियाँ उच्च अध्ययन जारी रखने में असमर्थ हैं, उन्हें भी आर्थिक रूप से आत्म-निर्भर होने में मदद मिल सके।

2020 में केकेजीएम ने खदीजतुल कुबरा गर्ल्स एकेडमी नामक अपना दूसरा उपक्रम शुरू किया, ताकि छात्राओं को स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद मदद दी जा सके। अकादमी का उद्देश्य यह है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के साथ-साथ सिविल सेवा परीक्षा, कर्मचारी चयन आयोग परीक्षा, संयुक्त विधि प्रवेश परीक्षा और संयुक्त प्रवेश परीक्षा जैसी अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने के इच्छुक लोगों के लिए कोचिंग क्लासेस की व्यवस्था की जाए। अभी यह एक शुरुआती अवस्था में है और भविष्य में अधिक लड़कियों के लिए सुरक्षित भविष्य सुनिश्चित करने के लिए अकादमी ने एक स्पांसरशिप कार्यक्रम शुरू करने का सोचा है।

केकेजीएम का समग्रतात्मक दृष्टिकोण इस विश्वास को पुष्ट करता है कि उचित परिस्थितियाँ मिलने पर हर बच्चा सीख सकता है। आवासीय सुविधाएँ लड़कियों को स्कूल की ओर आकर्षित करने और उन्हें स्कूल में बनाए रखने में मदद करती हैं और उपचारात्मक कक्षाएँ यह सुनिश्चित करती हैं कि अत्यन्त कमज़ोर छात्रा भी हार न माने। अकादमी द्वारा आयोजित अतिरिक्त कोचिंग कक्षाओं से छात्राओं की वे बाधाएँ कम हुईं जिनका सामना शायद उन्हें कहीं और प्रशिक्षण प्राप्त करने में करना पड़ सकता था। यह कक्षाएँ छात्राओं को बाहरी दुनिया के लिए तैयार भी करती हैं। छात्राओं के अँग्रेज़ी कौशल में सुधार करने का इसका भविष्यवादी दृष्टिकोण भी अभिभावकों को अपनी ओर खींचता है।

वित्तीय परिस्थितियाँ अक्सर छात्राओं की शिक्षा पर रोक लगा देती हैं। केवल स्कूल- स्तर पर ही नहीं बल्कि उच्च अध्ययन में भी केकेजीएम की वित्तीय सहायता यह सुनिश्चित करती है कि उन लड़कियों को भी अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने का मौका मिले जो अन्यथा शायद पढ़ाई छोड़ देतीं।

इस बात को स्वीकार करते हुए कि आर्थिक सहायता के बावजूद कुछ लड़कियाँ ऐसी होंगी जो आगे की पढ़ाई जारी नहीं रख पाएँगी, उनकी मदद के लिए स्कूल में व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है ताकि लड़कियाँ अपने घरों के भीतर से ही आर्थिक रूप से आत्म-निर्भर हो सकें। और यह दृष्टिकोण इस धारणा को मज़बूत करता है कि अधिगम का मतलब केवल ऊँची-ऊँची डिग्रियाँ प्राप्त करना नहीं है; केकेजीएम में प्रत्येक छात्रा को कोई-न-कोई कौशल सीखने में मदद करके उन्हें उज्ज्वल भविष्य के लिए तैयार किया जाता है।

References

i United Nations International Children's Emergency Fund (UNICEF), *All Children in School by 2015: Global Initiative on Out-of-School Children*. UNESCO Institute for Statistics, New Delhi, 2014

ii ASER 2018, *Annual Status of Education Report (Rural): 'Young Children'*, ASER Centre, 2020

iii The Print, *Muslim girls less likely to drop out of school than boys at higher education level*, 22 October 2018



श्रीजिता चक्रवर्ती युवा लड़कियों को वर्चुअल रूप से अँग्रेज़ी सिखाने के लिए ऐन फाउण्डेशन के साथ वॉलंटियर के रूप में जुड़ी हुई हैं। वे वर्तमान में गार्टनर के साथ एक वरिष्ठ अनुसन्धान विशेषज्ञ के रूप में कार्य करती हैं। उनसे srijitac@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल